लेखक के बारे में

जॉन नैल्सन आर्मस्ट्रॉन्ग का जन्म 6 जनवरी 1870 तथा मृत्यु 12 अगस्त 1944 को हुई। उन्होंने छह मसीही कॉलेजों में शिक्षक का काम किया और उनमें से चार के प्रधान रहे। यूनानी भाषा उनके जीवन का आनन्द थी और उन्होंने अपने आप को इसमें डुबो दिया था। जेज़्स ए. हार्डिंग की निगरानी में उन्होंने ज़िनोफोन, थुसीडाइड्स, प्लेटो, होमेर और अन्य उत्कृष्ट यूनानी लेखकों की पुस्तकें पढ़ी थीं। सुकरात की एकाग्रता और प्लेटो की भाषा की शालीनता और सुन्दरता के लिए, वह विशेष रूप से *अपोलॉजी* से विशेष प्रेम रखते थे। यूनानी भाषा के अपने ज्ञान के बढ़ने को, उन्होंने ''नाशवान जीभ द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले विचार को व्यज़्त करने का सबसे सिद्ध हथियार अर्थात वह भाषा'' ''जिससे अर्थ की संवेदनशील परछाइयों को व्यज़्त किया जा सकता है अर्थात ऐसी भाषा जिसमें हम लेखक के मन की गहराइयों तक को पढ़ सकते हैं'' कहा। उनका मानना था कि परमेश्वर के लिए मनुष्य को अपना प्रकाश देने के लिए यह सबसे सिद्ध हथियार था।[1]

आर्मस्ट्रॉन्ग की महानता केवल उनकी शैक्षणिक उपलज़्धियों पर ही नहीं थी। मसीही शिक्षा के लिए उनके बलिदान भी अभूतपूर्व हैं। वैस्टर्न बाइबल और ओडेसा, मिज़ोरी में लिटरेरी कॉलेज के प्रेसिडेंट आर. एन. गार्डनर का ऑमस्ट्रॉन्ग के बारे में कहना था, ''उनकी तरह बलिदान करने वाले बहुत कम लोगों को मैं जानता हूं। उन्होंने अपनी बातों का नहीं बल्कि दूसरों की बातों का भी ध्यान रखा।''[2] 1924 से 1936 तक वह हार्डिंग कॉलेज (अब यूनिवर्सिटी) के प्रेसिडेंट रहे। बेशक कुछ लोग उनके काम को भूल गए होंगे और कइयों को उनके काम के बारे में बताया ही नहीं गया होगा, तो भी कैज़्पस में आर्मस्ट्रॉन्ग का प्रभाव आज भी उतना ही है।

कॉर्डल, ओज़्लाहोमा में कॉर्डल क्रिश्चियन कॉलेज में लाइब्रेरी के विस्तार के लिए प्रेसिडेंट आर्मस्ट्रॉन्ग ने चंदा इकट्ठा किया; और लाइब्रेरी की और सहायता के लिए उनके साथ तीन अन्य शिक्षकों ने पुस्तकें खरीदने के लिए अपने पूरे एक वर्ष का वेतन दे दिया। इस दौरान उन्होंने अपना निर्वाह प्रचार द्वारा मिले थोड़े से पैसों से किया। हार्डिंग के अगले प्रेसिडेंट जॉर्ज एस. बिन्सन कहते थे कि आर्मस्ट्रॉन्ग ने हार्डिंग को उन कठिन वर्षों में चलाकर जब उन्हें दूसरे शिक्षकों को वेतन देने के लिए स्वयं बिना वेतन के काम करना पड़ता था, अपना जीवन दे दिया।

एक मसीही विद्यालय के बारे में आर्मस्ट्रॉन्ग का विचार स्पष्ट था। उन्होंने लिखा है, ''सचमुच और बुद्धिमज़ापूर्वक सोचने, न्यायसंगत ढंग से निर्णय लेने, सही सोच रखने के लिए किसी मन की अगुआई करना बहुत ही निपुणता का काम है।'' परन्तु मसीही शिक्षा को वह इससे भी ऊपर मानते थे। उन्होंने आगे लिखा,

> ...इस दिमाग़ में, छोटे से छोटे लोग भी बड़े सुन्दर और अद्भुत होते हैं। कुछ लोग इसे विवेक कहते हैं, और कुछ नैतिक समझ। ... हम इसे कुछ भी नाम दें, परन्तु यह मनुष्य को दूसरे पशुओं से अलग करके उसका भविष्य अनन्तकाल के लिए उनसे अलग कर देता है। ... सो अपने काम में हमारा मुज्य लक्ष्य हर लड़के और लड़की को रात के लिए एक संवेदनशील विवेक देकर घर भेजना है, जिसमें उसके मन में अपने अधिकार तथा कर्ज़व्य के प्रति और अधिक सज़्मान हो। किसी लड़के को इस विवेक के बिना एक सौ वर्ष तक जीवित रहना सिखाने के लिए तैयार करना संसार के लिए और उसके लिए भी बहुत बड़ा श्राप होगा।[3]

उनका कहना था, ''हम बड़े लज़्बे समय से लोगों को *सुधारने* की कोशिश करते आ रहे हैं। अभी हाल ही के वर्षों में हमें समझ आई है कि हमारा वास्तविक काम *सुधारना* नहीं बल्कि उन्हें *बनाना* है।'' छात्रों को महान चरित्र वाले नागरिक बनाने के लिए उनका फार्मूला था ''... लड़के को अच्छे आदर्शों, आत्मिक दर्शन और जीवन के उच्च मूल्यों को देखने और समझने की सामर्थ देकर तैयार करना।''[4]

अपनी सकारात्मक शिक्षा के अतिरिज़्त, आर्मस्ट्रॉन्ग का व्यज़्तित्व एक संस्थान की तरह था। उनकी दयालुता, करुणा, स्पष्टवादिता और विश्वास प्रभावित करने वाले थे। जहां भी वह गए वहां लोगों में आत्मविश्वास और आनन्द भर गया। उनके साथ उनकी पत्नी भी छात्रों से अपने बच्चों की तरह व्यवहार करती थी। एक छात्र जिसके पिता की बसन्त ऋतु में मृत्यु हो गई थी, ने बर्फीले तूफ़ान में बिना कोट के बाहर जाने की ठान ली थी। उसके स्वास्थ्य के प्रति चिंतित, आर्मस्ट्रॉन्ग दज़्पज़ि ने उसे एक ओवर कोट लेकर दिया। छात्रों के साथ आर्मस्ट्रॉन्ग के सज़्बन्ध का रहस्य यह था कि वह उनसे प्रेम करते थे और छात्र भी उनके प्रेम का सज़्मान करते थे। वह उनके लिए कुछ भी करने को तैयार रहते थे। यूनानी भाषा की ज़्लास में वह पूरा साल जी. डज़्ल्यू केफर नाम के केवल एक छात्र को पढ़ाते रहे।

आर्मस्ट्रॉन्ग के ''लिबर्टी इज़ फाउंड इन डूइंग राइट'' अर्थात सही काम करने में आजादी मिलती है पर अपने संदेशों से गलतियों को सुधारने के लिए मोड़ दिया और उनमें नैतिक मूल्यों का आधार स्थापित कर दिया। श्रीमती अरल स्मिथ कहती हैं, ''छात्रों को सही काम करने के लिए समझाने के लिए हमने उनके जैसा वज़्ता नहीं देखा। मुझे याद है कि जब मुझे लगता था कि चाहे सारा संसार मेरे विरुद्ध हो जाए मैं ही सही हूं, कैसे उनकी बात से मेरा मन पिघल गया था। मुझे नहीं लगता कि चैपल (प्रार्थना भवन) और ज़्लासों में उनसे सुनने के बाद कभी कोई सही काम करने से पीछे हटता हो।'' वह बाइबल ज़्लासों में और चैपल में इसी बात पर ज़ोर देते थे कि लोगों को बनाने के लिए नियमों या कानूनों की नहीं बल्कि सिद्धांतों की आवश्यकता होती है: ''एक लड़की या लड़का दिन के उजाले में पहरेदारों के सामने वास्तव में वह नहीं होते, जैसा रात के अंधेरे में जब परमेश्वर के सिवाय उन्हें कोई नहीं देखता। महान लोगों को महान इसलिए कहा जाता है ज़्योंकि दानिय्येल की तरह उनके अपने सिद्धांत होते हैं जिन्हें वे तोड़ नहीं पाते।''

आर्मस्ट्रॉन्ग की मृत्यु पर, परमेश्वर के लोगों ने उनके प्रभाव का अवलोकन करने की कोशिश की थी। एक ने कहा, ''यदि इब्रानियों की पत्री का लेखक आज यह पत्री लिखता, तो नि:संदेह वह विश्वास के नायकों में भाई आर्मस्ट्रॉन्ग को भी शामिल करता।'' एक अन्य व्यक्ति ने कहा, ''उनकी प्रार्थना ऐसे होती थी जैसे उनका एक हाथ परमेश्वर के हाथ में हो।'' एक और ने तो यहां तक कहा, ''उनका शांत प्रभाव दूर तक असर करने वाला था। मेरे विचार से हार्डिंग कॉलेज की सफलता का सेहरा जे. एन. आर्मस्ट्रॉन्ग के सिर था।''

आर्मस्ट्रॉन्ग के ''शांत प्रभाव'' को किसी उपनगर के नाम या कुछ तस्वीरों तक सीमित नहीं होना चाहिए। जिस आदमी ने मसीही शिक्षा तथा कलीसिया के लिए इतना कुछ दिया हो वह आज भी लोगों को शिक्षा देकर उत्साहित कर सकता है। कृपया इस पुस्तक में दिए पाठों का अध्ययन करें। आप देखेंगे कि पौलुस की तरह भाई आर्मस्ट्रॉन्ग आप से कह रहे हैं, ''तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं'' (1 कुरिन्थियों 11:1)।

जे. एन. आर्मस्ट्रॉन्ग का अध्ययन पाठक को बाइबल में ले जाकर उसे उसमें से निकलने नहीं देता। बाहर की पुस्तकों से उद्धृत किया गया है और उदाहरण भी दिए गए हैं, पर पाठक को बार-बार उनके मूल स्रोत अर्थात बाइबल में ही ले जाया गया है। इस पुस्तक में एक प्रिय, ईमानदार और ज्ञानी व्यक्ति द्वारा विशुद्ध मसीहियत की तस्वीर बड़ी खूबसूरती से बनाई गई है।

पाद टिप्पणियां

[1]एल. सी. सियर्स, *द बायोग्राफी ऑफ़ जॉन नैल्सन आर्मस्ट्रॉन्ग: फ़ॉर फ्रीडम* (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं. 1969), 32. [2]वहीं, 90. [3]वहीं, 115. [4]वहीं, 119.

संपादक की टिप्पणी

अमेरिका में 19वीं शताब्दी का आरम्भ गहन आत्मिक रुचि और धर्म में दिलचस्पी के महान जागृति के कालों के रूप में जाना जाता है। हज़ारों लोग धार्मिकता और अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता के वातावरण में धार्मिक सभाओं में जाते और बाइबल अध्ययन करते थे।

देश के बहुत से भागों में लोग धार्मिक रीतियों और शिक्षाओं पर प्रश्न उठाने लगे थे। वे अपने आस पास व्याप्त धार्मिक फूट से दुखी थे। उनमें से कुछ लोगों ने प्रेरितों के समय की मसीहियत की सादगी की ओर लौटने को ''कलीसिया की बहाली'' कहा था। अलग-अलग साम्प्रदायिक कलीसियाओं के लोग दूसरों से बिना किसी डिनोमिनेशन से जुड़े केवल मसीही बनने का आग्रह करने लगे।

उनमें से दो लोग पिता और पुत्र थॉमस व अलेक्ज़ेंडर कैम्पबेल थे जो स्कॉटलैंड से अमेरिका आए थे। अलेक्ज़ेंडर (1788-1866) एक ज़बर्दस्त प्रचारक, लेखक और बहस करने वाले व्यक्ति बने। साम्प्रदायिक कलीसियाओं में से निकलकर केवल मसीही बनने की उनकी बिनती को बहुत से लोगों ने स्वीकार किया। उनका विरोध करने वाले लोग इन मसीही लोगों को मज़ाक में ''campbellites'' अर्थात कैम्पबेल के अनुयायी कहने लगे थे। इसका उज़र कैम्पबेल ने यह कहकर दिया, ''नये धड़ों की सूची में और जोड़ने का मेरा कोई विचार नहीं है। यह खेल तो बड़े लम्बे समय से खेला जा रहा है। मैं तो गुटबाज़ी को खत्म होता देखने के लिए परिश्रम करता हूं कि हर मसीही उस नींव पर जिस पर प्रेरितों की कलीसिया बनी थी एक हो जाए।''[1]

इन अध्ययनों में, जे. एन. आर्मस्ट्रॉन्ग ने इस धारणा को कि नये नियम के मसीहियों को ''कैम्पबेलाइट्स'' कहा जा सकता है, जैसा कि बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में कुछ लोगों ने आरोप लगाया था, जवाब दिया है।

पाद टिप्पणी

[1]अलेक्ज़ेंडर कैम्पबेल, ''रिप्लाई टू 'टी.टी.' '' *द क्रिश्चियन बेप्टिस्ट* 3 (6 फरवरी 1826): 46.